International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 07-04-2023, Accepted: 23-04-2023, Published: 09-05-2023
Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 9-10

नगरीय भूगोल की उत्पत्ति, प्रक्रिया एवं विकासः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

संजय कुमार, डॉ. मनीषा कुमारी
सहायक प्रोफेसर, (भूगोल), राजकीय महिला महाविद्यालय, अटेली, हरियाणा, भारत

सारांश
नगरीय भूगोल मानव भूगोल की एक प्रमुख शाखा है। यद्यपि अधिवासों (ग्रामों और नगरों) का अध्ययन मानव भूगोल के साथ कुछ पहले से किया जाता रहा है। किन्तु एक सुनिश्चित विषय के रूप में नगरीय भूगोल की अवधारणा औद्योगिक क्रांति के पश्चात् उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की घटना है। नगरीय भूगोल का बड़े पैमाने पर अध्ययन बीसवीं शताब्दी की देन है जो प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) के पश्चात् ही संभव हो सका। 1950 के पश्चात् भूगोल के चिन्तन फलक में नवीन क्रांतिकारी मोड़ आया और भौगोलिक अध्ययनों में मात्रात्मक–गणितीय एवं सांख्किीय विधियों का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा। नगरीय भूगोल में भी मात्रात्मक उपागम प्रभावशाली होता गया और प्रतीक अध्ययनों को बाढ़ सी आ गयी। 1970 के पश्चात् समाजवादी (क्रांति परक), व्यवहारपरक तथा कल्याणपरक उपागमों के प्रयोग से नगरीय भूगोल का अध्ययन की पद्वति में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं।

मूल शब्दः मानव भूगोल, औद्योगिक क्रान्ति, मात्रात्मक उपागम, समाजवादी, कल्याणपरक

विकास की प्रवृत्ति तथा काल

क्रम के आधार पर नगरीय भूगोल के इतिहास को निम्नांकित कालिक वर्गों में विभक्त किया जा सकता हैः–

1. नगरीय भौगोलिक अध्ययन का प्रारंभिक काल (1800–1890)
2. नगरीय भूगोल का स्थापना काल (1890–1919)
3. अंतर्युद्ध काल (1919–1939)
4. द्वितीय विश्वयुद्ध एवं युद्धोत्तर काल (1939–1975)
5. अभिनव काल (1975 से अद्यतन)

नगरीय भौगोलिक अध्ययन का प्रारंभिक काल (1800–1890)

नगरीय स्थलों के अध्ययन का आरंभ उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही हो गया था जिसके अंतर्गत नगरीय स्थितियों पर प्राकृतिक पर्यावरण के प्रभावों का वर्णन मुख्य विषय होता था। बेरी और हार्टन (1970) के अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ (1805) में ही जेम्स स्टीवर्ट ने ऐसे कतिपय सिद्धांतों का वर्णन किया था जो गांवों, खेतों तथा पुखों के साथ ही पुरा और नगरों में जनसंख्या वितरण की व्याख्या करते थें। इसमें एक दशक पश्चात् (1815) अमेरिका में डेनियल ड्रेक ने स्थल संबंधी प्राकृतिक सुविधाओं का वर्णन करते हुए ओहियों के भावी महानगर पर प्रकाश डाला। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक नगरों से संबंधित अधिकांश अध्ययन यूरोप में विशेष रूप से जर्मन विद्वानों द्वारा किए गए। तत्कालीन नगरीय अध्ययनों में जर्मन भूगोलवेत्ता कोहल तथा रोस्चर का विशेष योगदान रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक से पूर्व तक किए गए नगर से संबंधित अध्ययन अत्यंत सरल और सामान्य प्रकार के थे। इनमें से अधिकांश नगरों की अवस्थिति से संबंधित थे जिनमें प्राकृतिक तत्वों के प्रभावों की चर्चा की गई थी।

नगरीय भूगोल का स्थापना काल (1890–1919)

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक से लेकर बीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक तक यूरोपीय देशों में मुख्यतया जर्मनी और फ्रांस में नगरीय भूगोल की आधारशिला रखी गयी। इस अवधि में नगरीय भूगोल के उद्देश्य, विषय क्षेत्र तथा अध्ययन विधि से संबंधित महत्वपूर्ण साहित्य की रचना प्रारंभ हुई। इस प्रकार नगरीय भूगोल को एक स्वतंत्र विषय के रूप में प्रतिस्थापित किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक मं जर्मन भूगोलवेत्ता हेटनर, श्ल्यूटर और हासर्ट ने नगरीय भूगोल के मुख्य उद्देश्यों और विधियों की विशद चर्चा की। हेटनर ने नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण तथा कार्यात्मक विशेषताओं के अनुसार विभिन्न युगों के नगरों के वितरण के मानचित्रांकन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भिन्न–भिन्न देशों में नगरों की विशेषता पर अवस्थिति तथा आर्थिक एवं सांस्कृतिक दशाओं के प्रभाव की भी विवेचना की थी। लगभग इसी समय ब्रिटिश भूगोलवेत्ता चिशोल्म ने भी नगरीय भूगोल का अध्ययन आरंभ किया और नगरीय स्थलों के वितरण तथा अवस्थिति को अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाया। बीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक में ब्रिटिश भूगोलवेत्ता पैट्रिक गेडीस ने नगरीय भूगोल को संगठित तथ ठोस स्वरूप प्रदान किया। उन्हें यूरोप में नगरीय भूगोल का जनक के रूप में जाना जाता है। नगरीय भूगोल पर गेडीस की प्रसिद्ध पुस्तक 'Cities पद Evolution' लंदन से सन् 1915 में प्रकाशित हुई। इसमें उन्होंने 6 'सन्नगर' संकल्पना का सर्वप्रथम प्रतिपादन किया था। उन्होंने ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस आदि यूरोपीय तथा अमेरिकी देशों के अनेक नगरीय प्रदेशों का अध्ययन किया और ब्राह्य विस्तार के परिणामस्वरूप कई नगरों के परस्पर मिल जाने से निर्मित सतत नगरीकृत क्षेत्र को 'सन्नगर' की संज्ञा प्रदान की।

अन्तर्युद्ध काल (1919–1939)

प्रथम विश्वयुद्ध की अवधि में यूरोपीय देशों के अधिक प्रभावित होने के कारण नगरीय भूगोल की प्रगति में एक स्थिरता सी आ गई थी किन्तु उसके पश्चात् पैट्रिक गेडीस के कार्यों तथा कार्यविधियों का परवर्ती लेखकों पर अधिक प्रभाव पड़ा विशेष रूप से नगर–नियोजन से सम्बद्ध पहलुओं पर। नगर–योजना के निर्माण पर गेडीस के जैविक उपागम का व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ता है। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक तक जर्मन भूगोलवेत्ताओं ने मुख्यरूप से नगर के आंतरिक पक्ष पर ही कार्य किया था। प्रादेशिक केन्द्र के रूप में नगरों का व्यवस्थित अध्ययन 1930 के पश्चात् हुआ। केन्द्र स्थलों का युक्तिपरक अध्ययन वाल्टर क्रिस्टालर के कार्यों से आरंभ होता है। उन्होंने जर्मन भाषा में लिखी अपनी पुस्तक (1933) में 'केन्द्र स्थल सिद्धांत' का सम्यक् प्रतिपादन किया। इससे केन्द्रस्थल सिद्धांत का व्यापक प्रसार हुआ और नगरों के वितरण प्रतिरूपों, कार्यों, पदानुक्रमों, प्रभाव क्षेत्रों आदि विषयों पर अध्ययन आरंभ हुए और इसका प्रभाव जर्मनी सहित अन्य अनेक पाश्चात्य देशों पर पड़ा।

द्वितीय विश्व युद्ध एवं युद्धोत्तर काल (1939–1975)

द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभिक काल से ही नगरीय अध्ययनों के दृष्टिकोणों, विधियों तथा संकल्पनाओं में स्थायित्व आने लगा और अगले लगभग 20 वर्षों के भीतर यूरोप और अमेरिका के बाहर भी अनेक देशों में नगरीय भूगोल का अध्ययन–अध्यापन विश्वविद्यालय स्तर पर होने लगा। इस अवधि में अन्य सामाजिक विज्ञानों यथा समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि में प्रयुक्त होने वाली सांख्यिकीय एवं गणितीय विधियों तथा नियमों का नगरीय अध्ययन के उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। इस प्रकार क्षेत्रीय अध्ययनों में सर्वेक्षण, प्रश्नवालियों, साक्षात्कार आदि को भी सम्मिलित जाने लगा जिससे नगरीय अध्ययनों में एक नवीन मोड़ दिखाई पड़ा। प्रादेशिक केन्द्र के रूप में नगरों के अध्ययन के साथ ही आंतरिक भूमि उपयोग तथा कार्यात्मक पेटियों के निर्धारण में भी आंकडों तथा मात्रात्मक विधियों का व्यापक प्रयोग होने लगा।

अभिनव काल (1975– अद्यतन)

अभिनव काल के नगरीय भूगोलवेत्ताओं में बेरी का नाम सबसे पहले आता है उन्होंने नगरीय भूगोल को आधुनिक दृष्टि, दिशा और तकनीक प्रदान किया है। बेरी ने नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण हेतु बहुचर विश्लेषण का प्रयोग किया गया। इस विधि को स्मिथ ने और अधिक स्पष्ट और विकसित करने का प्रयास किया। उन्होंने आधुनिक नगरीय भूगोल के स्वरूप निर्धारण में भी सराहनीय भूमिका निभायी। पिछले तीन दशकों में नगरीय भूगोल के विकास में अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों तथा अधिवेशनों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस अवधि में नगरीय भूगोल अपनी प्रौढ़ावस्था पर पहुँचा हुआ प्रतीत होता है। अब युरोपीय देशों तथा आंग्ल अमेरिका में व्यक्तिगत नगरों के भौगोलिक अध्ययन पर अधिक बल दिया गया है।

निष्कर्ष

नगरीय भूगोल की अवधारणा एक सुनिश्चित विषय के रूप में औद्योगिक क्रांति के पश्चात् उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की घटना हैं अन्य विज्ञानों तथा भूगोल की दूसरी शाखाओं की भांति नगरीय भूगोल के विकास में समय कारक का उल्लेखनीय योगदान रहा है। भाषा संबंधी कठिनाइयों के होते हुए भी समान काल में नगरीय भूगोल के अध्ययन का स्तर विश के कई प्रदेशों में लगभग मिलता–जुलता पाया गया है। अतः नगरीय भूगोल के ऐतिहासिक विकास के विवेचन में देश पक्ष की अपेक्षा काल पक्ष को ही आधार बनाना ज्यादा उपयुक्त प्रतीत हेाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Harbert DT. Urban Geography: A Social Persepective, David and Charles, Newton, Abbot, 1972.
2. Auroussau M. “Recent Contributions to Urban Geography-A Review,” Geographical Review, 1924, 14.
3. Beaujew-Garmier J, Chabbot G. Urban Geography (Eng. Trans.) Longmans, Green& Comp. Ltd., London, 1967.
4. Berry BJL, Horton Frank E. Geographic Perspectives on Urban Systems, Prentice Hall. Englewood Cliffs, New Jersey, 1970.
5. Carter Harold. The Study of Urban Geography, Edward Arnold, London, 1975.
6. Chandler T, Gerald F. 300 Years of Urban Growth, Academic Press, New York and London, 1974.
7. Dickinson RE. City and Region-A Geographical Interpretation, Routledge and Kegan Paul, London, 1964.
8. Johnson JH. Urban Geography-An Introductory Analysis, Pergaman, Press, London, 1968.